गाँधी आश्रम की व्यूह रचना एक अध्ययन

निक्कू नेहरा

अवज्ञा आंदोलन

साबरमती आश्रम जहाँ 14 फरवरी 1930 से पूर्व प्रातः एवं सांय राम धुन का गान होता था, चरखें के चलने का अनोखा नांद गूंजा करती थी एवं पिछड़े हुए भारत के सामाजिक उत्थान के लिए योजना तैयार होती थी, अचानक संसार का एक व्यूह रचना कोई बन गया था। ''कांग्रेस की कार्यकारिणी ने 16 फरवरी को एक निर्णय लिया कि नागरिक अवज्ञा आंदोलन का श्री गणेश साबरमती आश्रम में हो। अब पूरे देश की नजरें साबरमती की ओर लग गयी। जन–जन यह जाने को उत्सुक हो गया कि आंदोलन का आरम्भ कैसे होगा?''1 असंख्य नर–नारी बापू द्वारा आरम्भ करने वाले आन्दोलन के लिए अपने प्राणों की आहुति डालने के लिए उत्सुक थे।

''आर्थिक मंदी के फलस्वरूप कृषि सम्बंधी के भाव 50 प्रतिशत से आर्थिक गिर जाने के कारण किसानों की स्थिति इतनी तंग हो गई थी कि वे एक गज कपड़ा या लैम्प में डालने के लिए एक बोतल तेल भी नहीं खरीद सकते थे। सीधा–साधा तथ्य यह था कर लगान और ऋण चुकाने में असमर्थ थे।''2 महात्मा जी ने इस बात को वायसराय के सामने रखा और वायसराय ने उनकी बात नहीं मानी। फलतः महात्मा ने इस आन्दोलन का विचार बनाया। यह सब कुछ देश की गंभीर स्थिति का प्रतिफलन था। इसके साथ ही नमक सत्याग्रह भी निश्चित हो गया।

नमक सत्याग्रह :–

12 मार्च को प्रातः ही महात्मा ने 79 पुरूष यात्रियों सहित साबरमती आश्रम से गुजरात जिले के समुंद्र तल पर डांडी के लिए पैदल चल पड़े। 380 किलोमीटर की यह यात्रा ऐतिहासिक थी। महात्मा और उसके सहयोगियों ने इसे 24 दिन में पूरा किया। 6 अप्रैल 1930 को महात्मा जी ने नमक कानून को उल्लंघन किया था और आन्दोलन का श्री गणेश किया था। रास्ते के दौरान यह 80 आदमियों की टोली विषाल जनसमूह में परिवर्तित हो गई और इसका उत्साह सराहनीय था। अंग्रेज हील गए। ''सारा विश्व देख रहा था। प्रतिदिन यात्रा के समाचार अखबार में छप रहे थे। बड़े–बड़े लेख प्रकाशित हो रहे थे।''3 अंग्रेज सरकार इसकी हँसी उड़ा रही थी, तुच्छ कह रही थी, यह सब अंग्रेज सरकार का दिखावा था। अंग्रेज सरकार आन्दोलन के वेग को देखते हुए 4 मइ को गिरफ्तार कर लिया। सरकार स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार हो चुकी थी। पुलिस ने सत्याग्रहियों पर पूरा अत्याचार किया। ''गांधी जी का शरीर जो जेल में है, परन्तु आत्मा तुम्हारे साथ है। भारत का स्वाभिमान तुम्हारे हाथ है। किसी भी स्थिति में तुम हिंसा पर नहीं उतरोगे। तुम्हारी पिटाई होगी परन्तु तुम प्रतिरोध नहीं करोगे, तुम पर लाठियाँ पड़ेगी पर तुम बचाव में हाथ उपर नहीं उठावोगे।''4 यंग इंडिया 12 जून 1930 के अनुसार, ''पुलिस शांत सत्याग्रहियों की खोपड़ियों और छाती पर वार करती, गुप्त भागों पर प्रहार करती, उन्हें नंगा करके शर्मनाक हरकतें करती, घायलों को टांगों से पकड़कर घसीटती, उन्हें कांटों पर फैकती, धरती पर पड़े हुओं पर घोड़े दौड़ाती, उनके शरीर में लोहे की कील ठोकती थी इत्यादि–इत्यादि।''5 स्वतंत्रता सेनानियों ने कितने कष्ट सहे होंगे अनुमान लगाया कठिन नहीं है।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन :– साईमन कमीशन के द्वारा भारतीयों की समस्याओं को सुलझाने के लिए गोलमेज सम्मेलन का सुझाव दिया गया। भारतीयों ने इसका विरोध कि 12 नवम्बर 1930 को यह सम्मेलन लंदन में आयोजित हुआ। इसमें भारत के राजा जिनकी संख्या 16 थी, ब्रिटिश भारत के 56 और इग्लैंड से 13 प्रतिनिधि सम्मलित हुए। समझौते में ब्रिटिश एवं कांग्रेस के सम्बंध में तालमेल बिठाते की कोशिश की गई। ''जबकि आश्रम का निर्णय इसके विपरीत था, क्योंकि आश्रम जानता था कि यह सब्जबाग के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं।''6

मुस्लिम लीग का पैंतरा :–

आश्रम का अंग्रेजों पर बड़ा भय था। इसलिए उन्होंने मुस्लिम लीग का पैंतरा अपना लिया,

''इसलाहाबाद में हुए एक सम्मेलन में उनके नागरिक अवज्ञा आंदोलन का विरोध किया। इसलिए इरविन को यह कहने का अवसर मिल गया कि कांग्रेस सभी भारतीयों का प्रतिनिधित्व नहीं करती।''7

नेतागण रिहा :–

आश्रम का प्रभाव दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था, सारा भारत महात्मा माय हो रहा था, अंग्रेज आश्रम से बड़े चिंतित थे। 25 जनवरी 1931 एक बड़ा वक्तव्य दिया और मोती लाल नेहरू जैसे बड़ी उम्र के नेताओं को छोड़ने की प्रणाली को अपनाया, ''यह सरकार बहरूपियापन था।''

आश्रम को आघातः–

तीन दशकों से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नायक पंडित मोती लाल नेहरू का निधन हो गया। गांधी जी का मित्र, सलाहाकार एवं दाया बाजू सदा के लिए छिन चुका था। ''यह निश्चित रूप से को बहुत बड़ा आघात था। आश्रम को इससे उबरने में समय लगेगा।''9

गांधी इरविन समझौताः–

17 फरवरी 1931 तक गांधी और इरविन बातचीत चलती रही और अंत में निर्णय एक समझौते पर पहुंचा। ''गांधी इरविन समझौता पूर्ण स्वतंत्रता की दिशा में एक ठोस उपलब्धि था, यह पूर्ण सत्य नहीं था, यह सत्ता के अधिकारियों को मानते हुए, उनकी सत्ता को बनाए रखने का एक सुरक्षित मार्ग था। जिन नेताओं ने हृदय में शीघ्र स्वतंत्रता की तड़प थी, उनके लिए यह समझौता कड़वी गोली थी, फिर भी समझौते में दम था क्योंकि अंग्रेजी सरकार ने पहली बार उस पार्टी के साथ बराबर के दर्जे पर बात मानी, जिसको वह अयोग्य घोषित कर बैठी थी।''

कराची अधिवेशन :–

आश्रम अब एक दुखद घटना को झेल रहा था प्रसिद्ध पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी का निधन हो गया। यह घटना कानपूर की थी। गणेश शंकर की हत्या कर दी गई थी। एक धर्मांध मुसलमान उनका कत्ली था। इसी समय सरदार पटेल की अध्यक्षता में यह अधिवेशन हुआ था। इस अधिवेशन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इसमें सत्याग्रहियों की प्रशंसा की गई थी, ''अन्य प्रस्तावों में सत्याग्रहियों के बलिदानों की प्रशंसा की, साम्प्रदायिक दंगों की निंदा की गई और मौलिक अधिकार की बात कही गई।''10

दूसरी गोलमेज सम्मेलन :– सरकार का गांधी इरविन समझौते पर निराशाजनक था। गांधी जी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में जाने के लिए तैयार नहीं थे। परन्तु बहुत मजबूर होकर उन्हें जाना पड़ा। इस सम्मेलन में लोग विभिन्न राज्यों से आए लोग अपना–अपना राग अलापते दिख रहे थ। ब्रिटिश सम्मेलन की सफल बनाने के लिए हर सम्भव कोशिश कर रहे, महात्मा गांधी का कहना था कि उनके और मेरे रास्ते अलग–अलग है। ''हम पूर्ण स्वराज से संतुष्ट हो सकते हैं, हम भागीदार होकर तुम्हारे साथ–साथ रहना चाहते हैं, गुलाम होकर नहीं।''11

मैकडानल्ड पंचार, गांधी जी का आमरण अनशन और

पूना समझौता :–

ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने 16 अगस्त 1932 को साम्प्रदायिक समस्या के लिए मैकडनल्ड पंचार की घोषणा की। यह पंचार फूट डालो और राज की नीति से प्रभावित था। 1919 निर्वाचन मंडल के दस भाग थे अब 17 हो गए। इसके साथ दलित वर्गों को, जो वस्तुत हिन्दू जाति के थे को अलग भाग बना दिया, यह महात्मा गांधी की छाती चीर देने वाली बात थी। इसके विरोध में 20 सितम्बर को सर्वदा जेल में आमरण अनशन शुरू कर दिया। इससे पूरे देश में हलचल मच गई। ''पं. मदन मोहन मालवीय और अम्बेडकर सहित पूना में एकत्रित हुए और अनशन को विचार विमर्श हुआ। 26 सितम्बर को महात्मा जी ने अनशन तोड़ दिया। यह पूना समझौता प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार गांधी ने दलितों को हिन्दुओं को पृथक करने की ब्रिटिश शासन की चेष्टा को असफल कर दिया।''12

संदर्भ सूची

1. स्वतंत्रता का इतिहास, पुखराज जैन पृष्ठ 37
2. कांग्रेस का इतिहास, डा. पट्टाभी, पृष्ठ 399
3. स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, मदन लाल शर्मा, 44
4. सरोजनी नायडु का साबरमती भाषण 1930
5. यंग इंडिया 12 जून 1930
6. कांग्रेस का इतिहास, डॉ. पट्टाभी 400
7. इंडियन स्ट्रगल, सुभाष बोध 1908
8. यंग इंडिया 12 जून 1930
9. यंग इंडिया 12 जून 1930
10. कांग्रेस का इतिहास, डॉ. पट्टामी 403
11. दूसरी गोलमेज कांफ्रेंस गांधी जी का वक्तव्य
12. स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास पुखराज जैन, 10